# प्रारम्भिक साक्षरता

## परिचय

इस लेख में हम, "प्रारम्भिक साक्षरता " के बारे में समझेंगें। प्रारम्भिक साक्षरता में बच्चों में बुनियादी औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने से पूर्व पढ़ने और लिखने के बुनियादी कौशल विकसित किए जाते हैं। प्रारम्भिक साक्षरता के अंतर्गत बच्चों का विकास चार क्षेत्रों में होता है – **सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना**।

## प्रारम्भिक साक्षरता के सिद्धान्त

बच्चों में प्रारम्भिक साक्षरता के के कौशलों को विकसित करने की प्रक्रिया के कुछ महत्वपूर्ण सिद्धान्त है, जिनके अनुपालन करने से उनकी पढ़ने-लिखने की नीव मजबूत हो सकती हैं -

सतत प्रक्रिया: साक्षरता विकास एक सतत प्रक्रिया है, जिसकी शुरुआत जन्म से ही होती है और विभिन्न आयु में प्राप्त होने वाली विकासात्मक उपलब्धियों तक पहुँचती है।

सांस्कृति से प्रभावित: साक्षरता विकास बच्चे के सांस्कृतिक और भाषाई वातावरण से प्रभावित होता है। बच्चे अपने परिवेश में प्रयोग की जा रही भाषा को अपनी बातचीत में शामिल करते हैं। जैसे, उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में 'पीले' रंग को "पीयर" और 'सफ़ेद' रंग को "उज्जर" बोलते हैं। इसी प्रकार बच्चों के सामाजिक परिवेश के सांस्कृतिक व्यवहार, उनके बातचीत के लिए विषयों और ढंग को प्रभावित करते हैं।

भौतिक वातावरण: बच्चे के परिवेश में प्रिंट रिच वातावरण और लेखन सम्बंधित सामग्रियों, उनमें बोलने, पढ़ने और लिखने के बुनियादी कौशलों की वृद्धि में मददगार होते हैं । जैसे, बच्चे अक्षरों की बनावट को पहचानना शुरू करते है, चित्रों को देखकर उन पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित होते हैं।

खेल के माध्यम से सीखना: काल्पनिक खेल, चित्रकारी, कहानी सुनाना, काल्पनिक पठन और लेखन आदि के अवसर बच्चों में साक्षरता कौशल को विकसित करते हैं।

साक्षरता विकास बहुआयामी है: साक्षारता विकास की प्रक्रिया बहुआयामी है जिसमें **मौखिक भाषा** विकास जैसे शब्दावली निर्माण, वाक्य निर्माण, बातचीत, संदेश देना और प्राप्त करना, **ध्वनि जरुकता** जैसे विभिन्न ध्वनियों को पहचानना , उनमें समानता और अंतर को पहचानना, और **प्रिंट जागरूकता** जैसे पुस्तक से जुड़ाव, देखकर पढ़ना (sight reading), अक्षर पहचानना, पढ़ने की प्रक्रिया में वाक्य को बाएं से दाएं की ओर पढ़ना , काल्पनिक लेखन, चित्र व लिखित सामग्री का सम्बन्ध, शामिल है।

**प्री-स्कूल शिक्षा में बच्चों की आयु अनुसार प्रारम्भिक साक्षरता में विकास के स्तर**

| 3-4वर्ष आयु वर्ग के बच्चे | 4-5 वर्ष आयु वर्ग के बच्चे | 5-6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चे |
|---|---|---|
| **सुनने के कौशल में विकास का स्तर** | | |
| ✓ अपने परिवेश की विभिन्न ध्वनियों और तेज़-धीमी ध्वनियों के बीच अंतर करते है।<br>✓ परिचित गीतों और कविताओं को सुनते और उनका आनंद लेते हैं ।<br>✓ छोटे निर्देशों को सुनते हैं और उनका पालन करते हैं।<br>✓ छोटी अवधि की कहानियों को ध्यान से सुनते हैं।<br>✓ बोल-बोल कर पढ़ने को सुनते हैं उसमें रुचि दिखाते हैं और सवालों के जवाब देते हैं । | ✓ वातावरण की ध्वनियों में तेज और धीमे स्वरों के बीच अंतर कर पाते हैं ।<br>✓ गीतों/कविताओं में तुकांत शब्दों को गुनगुनाना और सुनना पसंद करते हैं ।<br>✓ एक बार में 2-3 चरणों के सरल निर्देशों का पालन करते हैं ।<br>✓ शब्दों में आरंभ और अंत के अक्षरों की ध्वनियों की पहचान करते हैं। | ✓ लंबे गीतों/कविताओं को ध्यान से सुनते हैं ।<br>✓ परिचित गीतों/कविताओं से तुकांत शब्दों की पहचान करते हैं।<br>✓ एक बार में 4-5 चरणों के निर्देशों का पालन करते हैं। |
| **बोलने के कौशल में विकास का स्तर** | | |
| ✓ सरल गीतों और कविताओं को दोहराते हैं ।<br>✓ सहायता के साथ घरेलू भाषा का उपयोग करते हुए परिचित लोगों के साथ छोटे वाक्यों में बोलते हैं, ज़रूरतों और भावनाओं को व्यक्त करते हैं।<br>✓ सामान्य और परिचित व्यक्तियों, वस्तुओं, अनुभवों और अवधारणाओं के लिए उपयुक्त शब्दावली का उपयोग करना शुरू करते हैं।<br>✓ शब्दों की ध्वनियों की नकल करते हैं और उस ध्वनि के अन्य शब्द बता | ✓ परिचित शब्दावली का उपयोग करके दोस्तों, परिवार और आंगनवाड़ी कार्यकत्रिओं के साथ दैनिक जीवन में बातचीत की शुरूवात करते हैं।<br>✓ सरल प्रश्न पूछते हैं ।<br>✓ कहानियों को याद करके अपने शब्दों में सुना पाते हैं।<br>✓ विशिष्ट विषयों और अवधारणाओं से सीखी हुई शब्दावली का उपयोग करते हैं ।<br>✓ अलग-अलग ध्वनियों से शुरू होने 2-3 अक्षरों को जोड़कर सरल शब्द बनाते हैं। | ✓ कहानियों, घटनाओं, जरूरतों पर आधारित बातचीत में भाग लेते हैं ।<br>✓ अपने दैनिक अनुभवों को विस्तार से बताते हैं और प्रश्न पूछते हैं ।<br>✓ अन्य बच्चों को स्पष्ट और सरल निर्देश देते हैं ।<br>✓ कहानी के विषय के अनुसार परिचित शब्दावली का उपयोग करते हुए कहानी के क्रम और उसके क्रिया- कलाप को बता पाते हैं ।<br>✓ परिचित शब्दों को बनाने के लिए ध्वनियों को जोड़ते है। |

| 3-4वर्ष आयु वर्ग के बच्चे | 4-5 वर्ष आयु वर्ग के बच्चे | 5-6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चे |
|---|---|---|
| पाते हैं ।<br>✓ अपनी कलाकृति जैसे कि ड्राइंग, क्ले मॉडल आदि के बारे में बात करते हैं। | | |
| पढ़ने के कौशल में विकास का स्तर | | |
| ✓ किताबों को सावधानी से हैंडल कर पाते हैं ।<br>✓ सामान्य चिह्न, लोगो और सामग्रिओं के लिखित नाम को पहचानते हैं ।<br>✓ लिखित सामग्री और चित्रों के बीच अंतर कर पाते हैं ।<br>✓ परिचित चित्र वाली पुस्तकों को पढ़ने का नाटक करते हैं और उसमें की गतिविधियों और वस्तुओं को पहचानते हैं ।<br>✓ शब्दों के अक्षरों को पहचानते हैं । | ✓ पुस्तक को ध्यान से पकड़ता है, खोलते हैं और पन्ने पलटकर पढ़ते हैं ।<br>✓ बाएँ से दाएँ और ऊपर से नीचे तक पाठ को फ़ॉलो करते हैं ।<br>✓ शब्द जैसी ध्वनियाँ निकालते हुए पढ़ने का नाटक करते हैं<br>✓ अक्षरों को देखकर पहचानना और मिलती हुई ध्वनियों से जोड़ना शुरू करते हैं<br>✓ परिचित अक्षरों से बने सरल दो अक्षरों वाले शब्दों को पढ़ते हैं ।<br>✓ देखकर पढ़ते है, और वस्तुओं को और उनके लिखित नाम को पहचानते हैं । | ✓ अक्सर इस्तेमाल किए जाने वाले अक्षरों को पहचानते है और उसे संबंधित ध्वनियों से जोड़ते है।<br>✓ परिचित अक्षरों से बने तीन या चार अक्षरों वाले सरल शब्दों को पढ़ते है।<br>✓ देखकर पढ़ते है; और वस्तुओं को और उनके लिखित नाम को पहचानते है।<br>✓ परिचित कहानियों की किताबों से परिचित शब्दों वाले छोटे वाक्यों को पढ़ते है। |
| पढ़ने के कौशल में विकास का स्तर | | |
| ✓ अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए चाक, पेंसिल, क्रेयॉन, पेंटिंग ब्रश जैसी विभिन्न लिखने की सामग्रियों का उपयोग करते है।<br>✓ चित्र बनाने और रंग भरने के लिए सामग्रियों का उपयोग करने में दक्षता दिखाते है।<br>✓ गतिविधियों में मोटर कौशल और हाथ-आँख के समन्वय को प्रदर्शित करते है, जैसे - | ✓ गतिविधियों में अच्छे मोटर कौशल और हाथ-आंख के बीच समन्वय को प्रदर्शित करते है जैसे कि बड़े मोतियों को पिरोना, बड़ी आकृतियाँ काटना, बटन लगाना, बोतल के ढक्कन को खोलना/बंद करना, क्रेयॉन से चित्र बनाना।<br>✓ लेखन सामग्रियों का सहजता और फ्लो के साथ | ✓ दूसरों की मदद लेकर सूक्ष्म मोटर कौशलों के उपयोग में अपनी दक्षता को प्रदर्शित करते है जैसे पेंसिल से चित्र बनाना, छोटे मोतियों को पिरोना, अक्षरों को पढ़ने योग्य लिखना, आकृतियों के अन्दर रंग भरना आदि।<br>✓ परिचित अक्षरों के साथ सरल शब्द लिखते है। |

| 3-4वर्ष आयु वर्ग के बच्चे | 4-5 वर्ष आयु वर्ग के बच्चे | 5-6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चे |
|---|---|---|
| लिखना, कागज़ पर स्क्रिबलिंग करना, चिपकाना, स्वतंत्रता से रंग भरना , मिट्टी का काम आदि। | उपयोग करते है।<br>✓ परिचित शब्दों के पहले अक्षर को लिखना शुरू करते है।<br>✓ सटीकता के साथ आकृतियाँ और वस्तुओं को देखकर बनाते है। | ✓ सरल शब्दों और वाक्यों को बनाते और जोड़ते है। |

***आँगनवाड़ी केंद्र में प्रारम्भिक साक्षरता में आँगनवाड़ी कार्यकत्री की भूमिका***

- *प्रिंट रिच वातावरण का निर्माण करना !!*
- बच्चे की पहुँच में पढ़ने और लिखने से संबन्धित आयु उपयुक्त सामग्रियाँ रखना जैसे चित्रों वाली कहानी की किताब, स्लेट-चॉक, सफ़ेद कागज, रंग आदि।
- केन्द्रों में सभी वस्तुओं का लेबलिंग करना, जोकि बच्चों की दृष्टि सीमा में हों।
- *पहल में बच्चों की आयु के अनुसार दी गयी प्रारम्भिक साक्षरता संम्बंधित गतिविधियों को नियमित एवं वार्षिक गतिविधि कैलेंडर के अनुसार क्रमिक रूप से संचालित करें !!*
- वार्षिक गतिविधि कैलेंडर के चौथे सत्र में प्रारम्भिक पठन और लेखन संबन्धित गतिविधियों को अवश्य कराये।
- पाँचवे सत्र में कहानी सनाने और भावगीत की गतिविधि को प्रतिदिन कराएं।

## *पहले किताब पलटना तो जाने!*

**प्रभावी प्रारम्भिक साक्षरता विकास के लिए सजग अभ्यास**

- **किताब कोना और कला कोना में उपयुक्त सामग्रियाँ रखें –** आंगनवाड़ी केंद्र में व्यवस्थित किताब और कला कोना, बच्चों में बुनियादी पढ़ने और लिखने के कौशलों के विकास को बढ़ावा देते है। इस लिए इन कोनों में ऐसी सामग्रियाँ होनी चाहिए जिससे बच्चों को किताबों से जुड़ाव करना का मौका मिले, और अपने विचारों को लिखित रूप से व्यक्त करने का अवसर मिल पाये। किताब कोने में कार्याकत्री द्वारा प्रयोग की जाने वाले किताब या गतिविधि पुस्तकें नहीं होनी चाहिए।

- **बच्चों द्वारा किए गए सभी चित्रकारी का रख-रखाव –** छोटे बच्चे पहले स्क्रिबलिंगकरते है, जो प्रारम्भिक लेखन का पहला चरण है। प्रतिदिन चित्रकारी करने के अवसर प्रदान करने से बच्चे संरचित आकृतियाँ बनाना शुरू करते हैं, जो उनकी छोटी मांसपेशियों में वृद्धि को दर्शाता हैं और उनके लिखने की क्षमता को बढ़ाता है। बच्चों द्वारा प्रतिदिन की गयी चित्रकारी का रख-रखाव, उनके पोर्टफोलियो में सुरक्षित रख कर किया जा सकता है।

- **प्रीटेंड राइटिंग के अवसर देना –** बच्चे द्वारा की गयी चित्रकारी पर उससे चर्चा करें। अपनी चित्रकारी पर उसके द्वारा दिये गए विवरण को सरल रूप से उसी कागज पर ज़ोर-ज़ोर से बोलते हुये लिखें। इस विधि से बच्चों को बोले गए और लिखित शब्दों के बीच संबंध को समझने और पहचानने में मदद मिलती हैं। इस प्रक्रिया से बच्चे नकल करते हुये धीरे-धीरे स्वयं लिखने की कोशिश करते है, यानि प्रीटेंड राइटिंग करना शुरू करते है, जिससे उनमें अक्षरों को लिखने की क्षमता विकसित होने लगती हैं।